इस्लाम की बुनियादी बातें

अबूसलीम मुहम्मद अब्दुल हई

विषय सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह रहमान, रहीम के नाम से

(१)

एक ख़ुदा पर ईमान

अगर आपसे कोई यह कहे कि यह रेलगाड़ी जो हज़ारों सवारियों को इधर-उधर ले जाती है, आप से आप बन गई है, यह आप से आप चलती है, जब चाहती है ठहर जाती है, और जब चाहती है चल पड़ती है तो क्या आप उसकी बात मान लेंगे? आप कहेंगे कि चाहे मैंने रेलगाड़ी के बनाने वाले को न देखा हो और चाहे उसका चलाने वाला भी मेरे सामने न हो, लेकिन मैं नहीं मान सकता कि यह किसी बनाने वाले के बिना बन गई और किसी चलाने वाले के बिना चलती और ठहर जाती है।

रेलगाड़ी तो बड़ी चीज़ है, आप तो यह भी नहीं मान सकते हैं कि यह मकान, यह कुर्सी, यह बर्तन, यह कलम या कोई भी चीज़ किसी बनाने वाले के बिना बन गई है या बन सकती है। आप कहेंगे कि मेरी समझ में यह बात नहीं आ सकती कि कोई चीज़ भी किसी बनाने वाले के बिना बन जाये और न मैं ऐसी बात मान सकता हूं।

अब ज़रा इस दुनिया को देखिए। यह ज़मीन जिस पर हम रहते हैं, यह चांद और सूरज जिन से हमारी ज़मीन पर रोशनी

हो रही है और ये करोड़ों तारे जो आसमान में जगमगाते हैं, ये हवायें, ये समुद्र, ये तरह-तरह के जानवर, चिड़ियाँ और फिर इंसान—हम और आप—क्या यह सब कुछ अपने आप बन गए हैं? अगर कोई ऐसी बात कहे तो क्या आप उसे मान लेंगे! आप कहेंगे कि जब एक कुर्सी, एक मकान, मिट्टी का एक बर्तन, पढ़ने की एक किताब और लिखने का एक कलम जैसी चीज़ें आप से आप नहीं बन सकतीं तो भला ऐसी बड़ी चीज़ें किसी बनाने वाले के बिना कैसे बन सकती हैं? ऐसी बात कहना बड़ी नादानी की बात है।

सूरज हमारी ज़मीन से लाखों गुना बड़ा है और इस ब्रह्माड में कितने सूरज हैं जो इससे भी सैकड़ों गुना बड़े बताए जाते हैं। फिर आसमान में चांद है, करोड़ों बड़े-बड़े तारे हैं और ये सब अपने-अपने रास्ते पर घूम रहे हैं। क्या मजाल है कि इन में से कोई अपने रास्ते से हट जाये और दूसरे से टकरा जाये, या उनकी चाल बाल बराबर इधर से उधर हो जाये। सूरज अपने वक़्त पर निकलता है और डूबता है। चांद जिस राह पर चल रहा है उससे कभी नहीं हटता। सूरज की गर्मी समुद्र के पानी को भाप बना कर उड़ाती रहती है। हवायें उस भाप को लेकर आगे बढ़ती हैं। अपने वक़्त पर यह भाप फिर पानी बन जाती है और वर्षा होने लगती है। कभी ऐसा नहीं होता कि सूरज अपनी गर्मी को रोक ले या पानी भाप बनने से इन्कार कर दे या हवायें अपना काम छोड़ दें। नहीं, बल्कि जो जिस काम पर लगा हुआ है वह बराबर अपना काम कर रहा है।

वर्षा हमारे जीवन का सहारा है। जब पानी बरसता है, ज़मीन से तरह-तरह के अनाज और पौधे पैदा होते हैं, इन से तमाम जानवर पलते हैं। पानी न बरसे तो ज़मीन कुछ ही दिनों

में चटियल मैदान हो जाए। न जानवर दिखाई दें और न चिड़ियां और न आदमी ही ज़िन्दा रह सके।

अब सोचने की बात यह है कि क्या इस दुनिया का यह कारखाना आप से आप ही चल रहा है? कोई इसका चलाने वाला और इसकी देखभाल करने वाला नहीं है? नहीं ऐसा नहीं है। इस दुनिया का एक पैदा करने वाला है और उसी के हुक्म से दुनिया का कारख़ाना चल रहा है। यहाँ जो कुछ हो रहा है उस की मर्ज़ी से हो रहा है, कोई चीज़ न आपसे आप बनी है और न कोई काम आप से आप हो रहा है।

अब खुद अपने आपको देखिये। आपको कितना सुन्दर शरीर दिया गया है और इस शरीर में कैसी-कैसी शक्तियां रखी गई हैं। आप बोलते हैं या यों कहिए कि अपनी ज़ुबान, होंठ और गले को कुछ हरकत देते हैं कि इससे आवाज़ पैदा होती है और आप जिस तरह चाहते हैं, इस आवाज़ को शब्दों के रूप में ढाल लेते हैं। इन शब्दों का कुछ अर्थ होता है। जो बात आपके दिल में होती है, उसे आप शब्दों के रूप में दूसरों तक पहुँचा देते हैं। यह काम हर शख़्स कर सकता है और किसी कष्ट के बिना बराबर करता रहता है। इसलिये आप कभी यह सोचते ही नहीं कि यह बोलना या बात करना कितनी बड़ी बात है। आपने ऐसे लोग देखे होंगे जो बोल नहीं सकते। वे पैदाइशी गूंगे होते हैं। आज तक इन्सान कोई ऐसा आला न बना सका कि ये गूंगे उसकी मदद से बोल सकते।

आप सुनते हैं या यों कहिये कि किसी दूसरे आदमी, जानवर या चिड़िया के बोलने या किसी और तरह आवाज़ पैदा करने वाले साधनों से हवा में जो लहरें पैदा होती हैं, वे जब आपके कानों से टकराती हैं तो आपको मालूम हो जाता है कि

कोई क्या बात कह रहा है, या कौन-सा जानवर चिल्ला रहा है और कौन-सी चिड़िया चहक रही है, या कोई ढोल पीट रहा है या किसी और तरह की आवाज़ पैदा कर रहा है। क्या आप का यह सुनना आज तक किसी साइंस जानने वाले की समझ में आ सका कि हवा में जो लहरें पैदा होती हैं, उनसे किस तरह आपको मालूम हो जाता है कि कहने वाला क्या कह रहा है और यह आवाज़ कैसी है? आपने ऐसे लोग देखे होंगे जो सुन नहीं सकते। कुछ पैदाइशी बहरे होते हैं, कुछ बाद में बहरे हो जाते हैं। क्या कोई शख़्स उनको सुनने की वह शक्ति दे सकता है जो उन से छिन गई है? इसी प्रकार आपका देखना, आपका सूंघना, और सबसे ज़्यादा आपका सोचना और समझना, ये सब ऐसे अनोखे कारनामें हैं कि इन जैसे काम न आज तक कोई कर सका और न आगे इसकी आशा है कि कोई ऐसे काम कर सके।

अब सोचने की बात यह है कि यह बोलने, सुनने और देखने वाला आदमी जिसके पास अक़्ल है, और जो ऐसे-ऐसे काम कर सकता है, जिन्हें देख कर बड़ा आश्चर्य होता है, क्या यों ही आप से आप बन गया है? इसके बदन का एक-एक भाग पुकार कर कह रहा है कि उसे बहुत ही होशियार कारीगर ने बनाया है, ऐसा कारीगर जिसके बराबर कोई दूसरा नहीं। हम सब जानते हैं कि इन्सान मां के पेट में बनता है, मगर क्या इन्सान के बनने की इस फैक्टरी में मां को कुछ इख़्तियार है? क्या हम कह सकते हैं कि मां बच्चे को बनाती है? क्या बाप वह कारीगर है जो बच्चे को बनाता है। नहीं ऐसा नहीं है। बच्चे को बनाने वाली न मां है न बाप। एक छोटी-सी थैली में इतने छोटे-छोटे दो कीड़े जिनको हमारी आंखें देख भी नहीं सकतीं. आपस

में मिल जाते हैं। मां के ख़ून से उनको ख़ोराक मिलने लगती है और वह सारी चीज़ें जिनसे इन्सान बनता है, उसी ख़ून के ज़रिये पहुंचती रहती हैं। क्या मां इन चीज़ों को पहुंचा रही है? उस बेचारी को तो यह पता तक नहीं होता कि उसके पेट की फैक्टरी में जो बच्चा बन रहा है, उसको किस किस चीज़ की ज़रूरत है और वह उसे कहां से पहुंचाये। मां जो कुछ खाती-पीती है, उसमें से वह सारी चीज़ें खिच-खिच कर ख़ून की शक्ल में पहुंचती रहती हैं और धीरे-धीरे इन्सान का शरीर बनता रहता है। कौन कह सकता है कि यह काम मां कर रही है।

थोड़े ही दिनों में मांस का लोथड़ा-सा बन जाता है और उसी लोथड़े में जहां आंखे बननी चाहियें वहां आंखें बन जाती हैं, जहां कान बनने चाहियें वहां कान बनते हैं, दिल बनता है जिगर और फेफड़े बनते हैं, ख़ून को दौड़ाने वाली रगें बनती हैं, सोचने वाला दिमाग़ बनता है और वे सारी चीज़ें बनती हैं, जिनसे मिलकर इन्सान बनता है। फिर इसमें जान पड़ती है, देखने-सुनने की ताक़त आती है और देखो! वही फैक्टरी जहां नौ महीने तक इन्सान बनता रहा था, अब उसे धकेल कर बाहर कर देती है। बाहर आते ही फेफड़े अपना काम शुरू कर देते हैं और बच्चे का यह कोमल शरीर बाहर की हवा और दूसरी चीज़ों से ताक़त हासिल करने लगता है। मां की छातियों में उसके लिये पहले से दूध मौजूद रहता है, जिसे आप जानते हैं, मां नहीं बनाती। इसी प्रकार लाखों आदमी आये दिन पैदा होते रहते हैं जिनमें से हरेक अलग-अलग सूरत का है। किसी की अक़्ल ज़्यादा, किसी की कम। किसी में कोई ताक़त ज़्यादा है तो किसी में कोई। हरेक का स्वभाव अलग, विचार अलग

और हरेक की योग्यताएं और सलाहियतें अलग। इस बात को जितना सोचेंगे आपकी अक़्ल उतनी ही हैरान रह जाएगी और आपका दिल पुकार उठेगा कि ऐसे कारनामे किसी बड़ी ताक़त वाले इंजीनियर के बिना नहीं हो सकते। वही अल्लाह है, सब का पैदा करने वाला। उसके सिवा क़िसी दूसरे में यह ताक़त नहीं कि वह कुछ भी पैदा कर सके।

अच्छा अब एक और बात पर ग़ौर कर लीजिए। आप जानते हैं कि कोई काम भी चाहे वह छोटा हो या बड़ा कभी सही ढंग से पूरा नहीं हो सकता, जब तक कि उस काम के पूरा करने की ज़िम्मेदारी किसी एक व्यक्ति पर न हो। किसी महकमे के दो आफ़ीसर, किसी सूबे के दो गवर्नर, किसी राज्य के दो राजा और किसी मुल्क के दो प्रधान मंत्री आपने कभी नहीं सुने होंगे और कहीं ऐसा हो तो फिर वहां का काम कभी ठीक नहीं चल सकता। ज़िम्मेदार कोई एक ही हो सकता है।

अब ज़रा अपने चारों तरफ़ इस विशाल दुनिया और उस के कामों को देखिये कि वह किस-किस तरह चल रहे हैं। ज़मीन जिस पर हम रहते हैं, उसको देखिए। जब आकाश से उस पर वर्षा होती है तो वनस्पति के बीज इसमें उग आते हैं। ज़मीन में ऐसी चीज़ें मिली हुयी हैं, जो पौधों की ख़ोराक का काम देती हैं। वर्षा होने के लिए आप जानते हैं कि सूरज की गर्मी की ज़रूरत है, जिससे समुद्र का पानी भाप बन जाता है। इस भाप को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए हवा को काम करना पड़ता है। पौधों को जमने के लिए जितनी गर्मी की ज़रूरत है वह भी सूरज से आती है। चांद को भी कुछ काम करना पड़ता है और इतना ही नहीं अब तो साइंस जानने वालों ने यह भी बता दिया है कि पौधों को जमने के लिए ज़मीन में

तरह-तरह के कीड़े भी काम करते हैं, ये हवा से नाइट्रोजन लेते हैं और पौधों के लिए ख़ोराक 'बनाते हैं। चीज़ों को गलाते सड़ाते हैं, जिससे खाद बनती है और इसी खाद से पौधों को ख़ोराक मिलती है। सारांश यह कि एक दाने के जमने और एक पौधे के बढ़ने और पलने के लिये सूरज, चांद, हवा, बादल और बारिश से लेकर ज़मीन के काम करने वाले लाखों कीड़ों तक न जाने किन-किन को काम करना पड़ता है, जब कहीं जाकर पौधा उगता है। फिर यह सब काम करने वाले अपने-अपने वक़्त पर काम करते हैं। मानो सब किसी एक ही के इशारे पर अपने-अपने काम में लगे हुये हैं।

अब ज़रा आसमान की तरफ़ देखिये। सूरज एक लगे-बंधे तरीके पर काम कर रहा है। कभी ऐसा नहीं होता कि रात अपने वक़्त से पहले आ जाये या दिन अपने वक़्त से पहले निकल आये। सर्दी और गर्मी के मौसम में कुछ तबदीली हो जाये। चांद को देखिये, उसकी चाल में कभी फर्क नहीं होता। जिस वक़्त उसकी जो शक्ल दिखाई देती है, वैसी ही दिखायी देती है। कभी ऐसा नहीं होता कि महीने भर के बदले पन्द्रह या बीस दिन में ही नया चांद दिखायी दे जाये। फिर एक चांद और सूरज ही क्या, आसमान में तो करोड़ों तारे अपनी-अपनी चाल पर चल रहे हैं। कभी ऐसा नहीं होता कि एक-दूसरे से टकरा जाएं। मालूम होता है कि किसी मशीन के पुर्ज़ों की तरह अपने-अपने काम पर लगे हुये हैं। न किसी की चाल बदलती है और न कोई अपना रास्ता बाल बराबर छोड़ता है।

अब सोचने की बात यह है कि आख़िर यह क्या बात है कि ज़मीन से दाने उगाने के लिये जिन चीज़ों की ज़रूरत है वे सब आपस में एक दूसरे से मिलकर काम करने करने के लिये

विवश हैं। कभी ऐसा नहीं होता कि हवा, पानी, सूरज, चांद या दूसरी चीज़ों में से कोई चीज़ भी एक दूसरे से मिलकर काम करना छोड़ दे और ज़मीन से दाना न उगे या हवा को जो काम करना है वह इसको करने से इन्कार कर दे। पानी को मिट्टी के साथ मिलकर जो काम करना है वह उसके बदले कुछ और काम करने लगे। सूरज की गर्मी अनाज पकाना छोड़ दे और ज़मीन बीज को जमाने और पौधों को ख़ोराक देने का कार्य न करे। करोड़ों वर्ष से ऐसा ही होता चला आ रहा है और कभी ऐसा नहीं हुआ कि पानी ने जलाने का काम किया हो या आग से सर्दी पैदा हुयी हो। आख़िर इसका क्या कारण है कि दुनिया के सारे कामों में अटूट सहयोग और सम्बन्ध मौजूद है और कभी इसमें ख़राबी नहीं पड़ती। इस सवाल का जवाब आप और क्या दे सकते हैं कि यह सारे का सारा काम किसी एक सम्राट और एक मालिक के इशारों पर हो रहा है। कोई एक ही प्रबन्धक है जो इस सारी दुनिया का प्रबंध कर रहा है और एक ख़ुदा है, जिसके हुक्म से यह सब कुछ हो रहा है। अगर कहीं इस दुनिया में दस-बीस का हुक्म चलता तो कभी यहां के कामों में ऐसा सहयोग न पाया जाता। दस-बीस तो क्या अगर ख़ुदा दो भी होते तो दुनिया का इन्तिज़ाम गड़बड़ हो जाता। एक मामूली से दफ़्तर या एक छोटे से राज्य में एक से ज़्यादा ज़िम्मेदार होते हैं तो सारा काम चौपट हो जाता है। दो ख़ुदाओं के होते इतनी बड़ी दुनिया का काम कभी ठीक नहीं चल सकता था।

कुछ लोगों का कहना है कि ख़ुदा तो एक ही है लेकिन बहुत से देवी-देवता मिलकर इसका हाथ बटाते हैं और दुनिया का काम चलाते हैं। यह बात ठीक नहीं। ख़ुदा वही हो सकता

है जो इतना शक्तिमान हो कि उसे किसी की मदद की ज़रूरत न हो। उसे सर्वशक्तिमान होना चाहिये और उसके होते किसी दूसरे का इख़्तियार न चलना चाहिये। उसने किसी को अपनी सल्तनत में शरीक नहीं बनाया और उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ किसी में यह ताक़त नहीं कि वह उसकी सल्तनत में इख़्तियार वाला बन बैठे। जो लोग इस क़िस्म की बात मानते हैं वे बड़े धोखे में हैं। जिस तरह यह बात सच्ची है कि दुनिया किसी ख़ुदा के बिना नहीं बनी है, उसी तरह यह बात सच है कि ख़ुदा एक ही है। कोई उसका साझी नहीं। वह सारा काम ख़ुद चला रहा है। उसे किसी की मदद की ज़रूरत नहीं। वह जो चाहे कर सकता है और करता है। किसी की मजाल नहीं कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ दम भर सके।

(२)

ख़ुदा के पैग़म्बरों पर ईमान

पूरी कायनात (जगत्) ख़ुदा ने बनायी है। यह दुनिया भी उसी की रची हुयी है। वही इसका मालिक है और उसी का हुक्म यहां चल रहा है। हर चीज़ उसी काम में लगी हुई है, जिसके लिये उसे बनाया गया है। हरेक के लिये कुछ नियम बने हुये हैं, उन्हीं का वे सब पालन कर रहे हैं। किसी की मजाल नहीं कि उन नियमों से बाल बराबर हटकर कुछ कर सके। पानी के बहने, भाप बनकर उड़ने और ठंड पाकर जम जाने के जो नियम बना दिये गये हैं, पानी उनसे बाहर नहीं जा सकता। सूरज, चांद और तारों के लिये जो नियम हैं, वह उन पर ही काम करने को मजबूर हैं। उनमें से किसी की क़ुदरत नहीं कि अपने इख़्तियार से कुछ कर सके। आसमान से बारिश होती है, ज़मीन से पौधे उगते हैं, बढ़ते, फूलते, फलते हैं और यह सब काम निश्चित नियमों के अनुसार ही होता रहता है। पौधों का अपना कोई इख़्तियार नहीं। ग़रज़ यह कि दुनिया की हर चीज़ उन्हीं नियमों की पाबन्द है जो उसके लिये बना दिये गये हैं। इन्सान भी अल्लाह की एक मख़्लूक़ (रचना) है। उसका पैदा होना, ज़िंदा रहना और मरना यह सब भी कुछ मुकर्रर किये हुये क़ायदों और ज़ाब्तों के मुताबिक़ ही होता है। किसी इन्सान की मजाल नहीं कि इन क़ायदों के ख़िलाफ़ कुछ कर सके। इन्सान की

पैदाइश के लिये जो नियम मुक़र्रर हैं वह उन्हें नहीं तोड़ सकता। उसके बस में नहीं कि वह आंखों से सुनने का काम ले सके या कानों से देख सके। वह अपनी ज़िदगी के एक बड़े हिस्से में खुदा के मुक़र्रर किये हुये क़ायदों और ज़ाब्तों का पाबन्द है।

इस हद तक मनुष्य और दूसरी चीज़ों में अन्तर दिखाई नहीं देगा, लेकिन मनुष्य की एक हैसियत और भी है जो उसके सिवा किसी ऐसी मख़लूक़ में मौजूद नहीं है जो हमें नज़र आती हो। इन्सान अक़्ल भी रखता है और एक हद तक इख़्तियार भी। इस अक़्ल और इख़्तियार की वजह से वह दुनिया की तमाम दूसरी चीज़ों से भिन्न है। इन्सान दूसरी चीज़ों की तरह बिल्कुल मजबूर नहीं। इन्सान सोचने-समझने की ताक़त रखता है और ज़िदगी के एक हिस्से में उसे इख़्तियार दिया गया है कि चाहे तो वह एक बात को माने, चाहे तो न माने। वह चाहे तो एक काम करे, और चाहे तो न करे। वह अच्छे रास्ते पर भी चल सकता है और बुरे रास्ते पर भी। वह अल्लाह की दी हुई शक्तियों से अच्छा काम भी कर सकता है और बुरा भी। इस तरह इन्सान की ज़िदगी के एक हिस्से में यह आज़ादी दी गई है कि वह चाहे जैसे काम करे।

इन्सान को जो आज़ादी दी गयी है वह उसे किस तरह इस्तेमाल करे, यह एक बड़ा बुनियादी सवाल है, क्योंकि इस आज़ादी के इस्तेमाल पर ही उसकी ज़िदगी बन और बिगड़ सकती है। इसी की बुनियाद पर दुनिया का इंतिज़ाम सुधर भी सकता है और बिगड़ भी सकता है। आप यह कह सकते हैं कि इन्सान को जो अक़्ल दी गयी है वह इसीलिये है कि वह इससे काम लेकर अपने इख़्तियार और आज़ादी को ठीक इस्तेमाल करे। लेकिन आपको यह बात भी माननी पड़ेगी कि इन्सान की

अक़्ल भी तो महदूद और सीमित है। और फिर हर इन्सान की अक़्ल एक जैसी नहीं। आज वह एक बात को सही समझता है, कल उसी के बारे में अपनी अक़्ल और तजुर्बे की रोशनी में ग़लत होने का फ़ैसला करता है। एक ही चीज़ को एक इन्सान सही और मुफ़ीद बताता है, दूसरा इन्सान उसी को घातक और ग़लत बताता है। आज हम अपने बहुत से पहले गुज़रे हुये बुज़ुर्गों की उन बातों को सही नहीं समझते, जिन्हें उन्होंने अपनी अक़्ल से सही समझा था और इसी तरह यह मुमकिन है कि आज हमारी अक़्ल जिन चीज़ों को ठीक कहती है कल हमारे बाद आने वाले लोग उसे बेवकूफ़ी और नादानी ठहरायें। इसलिये यह बात तो हरगिज़ ठीक नहीं कि इन्सान सिर्फ़ अपनी अक़्ल की बुनियाद पर अपनी आज़ादी और इख़्तियार को इस्तेमाल करने के लिए क़ोई राह मुकर्रर कर सके। इस बारे में वह निस्सन्देह एक ऐसी हिदायत का मुहताज है जो ग़लती से पाक हो और जो ऐसी हस्ती की तरफ़ से दी गयी हो जो इन्सान के गुज़रे हुये और आने वाले ज़माने पर पूरी तरह नज़र रखती हो।

आप यह देखते हैं कि इन्सान अपनी ज़िन्दगी को बाकी रखने के लिए बहुत-सी चीज़ों का मुहताज है। सांस लेने के लिये उसे हवा चाहिये, पानी के बिना वह ज़िन्दा नहीं रह सकता, खाने के लिये उसे भोजन की ज़रूरत है। फिर आप यह भी देखते हैं कि जिस ख़ुदा ने इन्सान को ज़मीन पर पैदा किया है, उसने उसकी तमाम ज़रूरतों को निहायत अच्छी तरह पूरा भी किया है। सांस लेने को हवा भी मौजूद है और जब वह सांस लेने से गन्दी हो जाय तो उसके साफ़ करने और उपयोगी बनाने का पूरा प्रबन्ध भी कर दिया गया है। पानी भी मौजूद है और उसके बराबर मौजूद रहने का इन्तिज़ाम भी कर दिया गया

है। इसी तरह भोजन के लिये जो कुछ चाहिये, उसके पैदा करने के लिये भी तरह-तरह के प्रबन्ध किये गये हैं। सारांश यह है कि ज़रा भी ग़ौर किया जाये तो बात साफ़ समझ में आ जाती है कि जिस ख़ुदा ने इन्सान को पैदा किया, वह उसके पालने पोसने की ओर से ज़रा भी ग़ाफ़िल नहीं है। मनुष्य के शरीर को बनाये रखने और परवान चढ़ाने के लिये अनगिनत शक्तियां काम में लगी हुयी हैं और वे सारे प्रबंध हो रहे हैं जो ज़रूरी हैं। पैदा करने वाला पालनहार भी है और वह इन्सान की परवरिश का बराबर प्रबन्ध भी कर रहा है।

अब ज़रा इस बात को फिर ध्यान में रखिये जो इससे पहले कही गई है। यानी यह कि इन्सान इस बात का मुहताज है कि उसे जीवन बिताने के लिये कहीं से हिदायत मिले। कोई उसे यह बताये कि वह अपने इख़्तियार और आज़ादी को किस तरह काम में लाये।यह बड़ी बुनियादी ज़रूरत है। क्योंकि इसके बिना इस बात की पूरी आशंका है कि मनुष्य अपने इख़्तियार और आज़ादी का ग़लत इस्तेमाल करे और इस तरह ज़िन्दगी को ग़लत रास्ते पर लगा ले। इन्सान हिदायत का मुहताज है। जिस तरह वह ज़िन्दा रहने के लिये बहुत-सी चीज़ों का मुहताज है, उसी तरह ज़िन्दगी को सही रुख़ पर लगाने के लिए उसे हिदायत की ज़रूरत है। जिस ख़ुदा ने इंसान को पैदा किया और उसके ज़िन्दा रहने के लिए बेशुमार प्रबंध किये, वह बड़ा दयालु है। उसने जिस तरह मनुष्य के शरीर को बनाये रखने के लिए अनगिनत प्रबन्ध किये हैं उसी तरह उसने मनुष्य की आत्मा के लिये अपनी हिदायत भी दी है। यह हो नहीं सकता कि वह मेहरबान ख़ुदा ज़िन्दगी प्रदान करता है, ज़िन्दा रहने के लिए हर तरह का सामान करता है, लेकिन

ज़िन्दगी बसर करने के लिये कोई हिदायत न देता।

मानव इतिहास हमारे सामने है। हम देखते हैं कि हर मुल्क और हर कौम में ज़िन्दगी बिताने के लिये कुछ ऐसे कायदे और ज़ाब्ते पाये जाते हैं, जिनके बारे में यह कहा जाता है कि यह खुदाई ज़ाब्ते और कायदे हैं। हर कौम में ऐसे लोग पैदा हुए हैं जिन्होंने यह दावा किया है कि हमारे पास खुदा का वह पैगाम है जो उसने इन्सानों को सीधी राह दिखाने के लिए हमें दिया है। इन बुज़ुर्गों ने हर ज़माने में यह बताया है कि खुदा की मर्ज़ी क्या है और उसने इन्सान को जो आज़ादी और इख़्तियार दिया है, वह उसके किस इस्तेमाल को पसन्द करता है और किस इस्तेमाल को नापसन्द करता है। इन महापुरुषों ने हर ज़माने में इन्सान को साफ़-साफ़ यह बताया है कि अच्छाई क्या है और बुराई क्या है। उन्होंने नेकी और बदी को अलग-अलग करके दिखाया है, यह बात दूसरी है कि इस सिलसिले में बहुत से लोग तरह-तरह की ग़लतियों का शिकार हो गये हैं और अब असल बात उनके सामने इस तरह स्पष्ट नहीं है जिस तरह स्पष्ट होनी चाहिये। मिसाल के तौर पर—

१. कुछ लोगों ने इन बुज़ुर्गों की बातों को कुछ दूसरे लोगों की बातों के साथ इस तरह गड़बड़ कर दिया कि अब इतिहास की दृष्टि से इस बात का कोई सबूत नहीं मिलता कि कौन-सी बात किसकी है।

२. बहुत से लोगों ने इन महापुरुषों के चरित्र को अफसानों और कहानियों के रूप में ऐसा गुम कर दिया है कि आज यह पता लगाना मुश्किल है कि कौन-सी बात किस महापुरुष से हमें पहुंची है।

३. कुछ लोगों ने इन बुज़ुर्गों को इन्सानियत के दायरे से

निकाल कर खुदाई-स्थान तक पहुंचाने की कोशिश की है और इस भ्रम में पड़ गये हैं कि खुद खुदा मनुष्य के रूप में इन्सानों की हिदायत के लिए ज़मीन पर आता रहा है। हालांकि खुदा का इन्सान के रूप में प्रकट होना किसी भी तरह उसके लिये शोभनीय नहीं और न उसे इसकी ज़रूरत ही है। सही बात यही है कि वह इन्सानों ही में से कुछ लोगों को चुन लेता है और उन्हें अपनी हिदायतें देकर दूसरे इन्सानों को सीधी राह दिखाने के काम पर लगाता है।

ऐसे महापुरुष जिन्हें खुदा ने इन्सानों को सीधी राह दिखाने के लिये चुना, अल्लाह के नबी या रसूल कहलाते हैं। ये तमाम इन्सानों में सबसे अच्छे इन्सान होते हैं। अल्लाह उन्हें हर बुराई से दूर रखता है और उनसे कोई गुनाह नहीं होने देता। वह उन्हें अपना फ़रमान या हिदायत देता है ताकि वे तमाम दूसरे इन्सानों तक उसे पहुंचा दें, क्योंकि उसके बिना कोई शख़्स भी यह नहीं कह सकता कि मैं जो कुछ कह रहा हूं वह खुदा की तालीम और हिदायत के मुताबिक़ कह रहा हूं। जो शख़्स खुदा को तो माने और यह न माने की उसकी तरफ़ से कुछ उसके रसूल और दूत भी बन कर आ सकते हैं, वह अपनी किसी मज़हबी तालीम और हिदायत को खुदाई तालीम या हिदायत कैसे कह सकता है। कोई शख़्स यह दावा नहीं कर सकता कि वह खुद खुदा से बात करके उसकी मर्ज़ी और हिदायत हासिल कर सकता है। इसके लिये बहरहाल उसे यह मानना पड़ेगा कि खुदा की हिदायत और तालीम उसे किसी न किसी ज़रिये से मिली है। यह ज़रिया एक है, यानी वे इन्सान जिन्हें अल्लाह ने अपना पैग़ाम देकर लोगों को सीधी राह दिखाने के लिये भेजा है। उन्हीं को पैग़म्बर, खुदा का रसूल और ईश-दूत कहा जाता है।

(३)
आख़िरत-फ़ैसले के दिन पर ईमान

आप ख़ुदा को भी मानते हैं। आपको यह भी यक़ीन है कि हर चीज़ को पैदा करने वाला वही है। आप यह भी मानते हैं कि दुनिया में जो कुछ हो रहा है सब उसके हुक्म और मंशा से हो रहा है। वही इस विश्व का प्रबन्ध संभाले हुए है। हर चीज़ की परवरिश का इन्तिज़ाम उसी ने किया है। इन्सान को भी उसी ने पैदा किया है और वही उसको पालता-पोसता भी है। फिर आपको इसका भी यक़ीन है कि इन्सान को सीधा रास्ता दिखाना ख़ुदा ही का काम है। और आप यह भी जानते हैं कि ख़ुदा ने इन्सान की हिदायत के लिये हर ज़माने और हर क़ौम में अपने रसूल भेजे हैं, जिन्होंने इन्सान को ख़ुदा की मर्ज़ी से आगाह किया है, ज़िन्दगी-बसर करने का सही तरीक़ा बताया है। नेकी और बदी को पहचानना सिखाया है और इन्सान को खोल खोलकर बता दिया है कि वह क्या करे और क्या न करे।

लेकिन आप यह भी जानते हैं कि इन्सान एक आज़ाद और स्वाधीन प्राणी है। वह अपने पूरे जीवन में दूसरी रचनाओं की तरह बेबस भी नहीं है बल्कि उसे यह इख़्तियार भी है कि वह चाहे तो एक रास्ता इख़्तियार करे और चाहे तो दूसरा। मानव इतिहास हमें बताता है कि हर ज़माने में इन्सानों ने दो ही रुख़ इख़्तियार किये हैं। रसूलों के तरीक़ों को इख़्तियार करने वाले

लोग भी हुये हैं ओर उन तरीक़ों से हटकर ज़िन्दगी बसर करने वाले लोग भी। यही बात आज भी देखते हैं कि आज भी इंसानों में अच्छे लोग भी हैं और बुरे भी। नेक भी हैं और बद भी। ख़ुदा के हुक्म पर चलने वाले भी हैं और उससे मुह मोड़ने वाले भी हैं। ख़ुदा के वफ़ादार भी हैं और उसके बाग़ी भी हैं। इस स्थिति पर यदि आप तनिक भी गौर करेंगे तो आप से आप यह सवाल आपके मन में उभरेगा कि क्या जो लोग ख़ुदा के फ़रमांबरदार हैं और जो लोग उसके नाफ़रमान हैं, यह दोनों बराबर हैं? क्या नतीजे और अंजाम के लिहाज़ से इन दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं? यह एक फ़ितरी सवाल है। यक़ीनन ऐसा नहीं हो सकता कि ख़ुदा की तरफ़ से कोई हिदायत तो आये और इन्सान को यह इख़्तियार भी हासिल हो कि चाहे तो उसे माने और चाहे तो न माने, लेकिन इसके बावजूद न मानने वालों से कभी कोई पूछताछ न हो और मानने वालों को उनकी फ़रमांबरदारी का कोई बदला न दिया जाए। यह बात अक़्ल और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है।

अल्लाह के जो रसूल अल्लाह का पैग़ाम लेकर आये, उन्होंने साथ ही साथ इन्सान को इस हक़ीक़त से भी ख़बरदार किया कि ज़िन्दगी की यह मुहलत दरअसल एक इम्तिहानी मुद्दत है। अल्लाह तआला ने इन्सान को जो इख़्तियार दिया है, वह इसी लिए है कि वह यह देखे कि कौन इस आज़ादी और इख़्तियार को सही ढंग से इस्तेमाल करता है और कौन ग़लत ढंग से । उस ने हमें अपनी हिदायत देकर इन्सानों की रहनुमाई के लिये भेजा है, तो इसमें एक पहलू यह भी है कि जो लोग इस हिदायत को मान लें, उन्हें इसका मुनासिब बदला दिया जाये और जो इसे ठुकरा दें, उन्हें उसकी कुछ सज़ा भी भुगतनी पड़े। इसीलिये

अल्लाह के इन नेक बन्दों ने साफ़-साफ़ यह बताया कि दुनिया की यह ज़िन्दगी दरअसल हर इन्सान के लिये अमल की एक मुहलत है, इस में जो व्यक्ति हमारे बताये हुये रास्ते पर चल कर नेकी और भलाई की ज़िन्दगी गुज़ारेगा उसे उसका बेहतरीन बदला दिया जायेगा और जो व्यक्ति इसके ख़िलाफ़ करेगा, वह कठोर सज़ा पायेगा। उन्होंने यह भी बताया कि हम ख़ुदा के दिये हुये इल्म की बुनियाद पर सारे इंसानों को यह बता देना चाहते हैं कि दुनिया का यह कारख़ाना एक दिन ख़त्म होकर रहेगा और इसके बाद सारे इन्सान दोबारा ज़िन्दा किये जायेंगे, सब अपने मालिक के सामने हाज़िर होंगे और हरेक से यह पूछा जायेगा कि वह ज़िन्दगी की इस मुहलत में क्या कुछ करके आया है। हरेक से यह पूछा जाएगा कि उसने ख़ुदा की दी हुई क़ुव्वतो और सलाहियतों को किन कामों में लगाया। उसने ज़िन्दगी ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ गुज़ारी या वह अपनी मर्ज़ी या अपने जैसे दूसरे इन्सानों की मर्ज़ी पर चलता रहा। अल्लाह के इन नेक बन्दों ने यह भी बताया कि इस दूसरी ज़िन्दगी मे अल्लाह के फ़रमांबरदारों को जो आराम और सुख मिलेगा और उन्हें जो नेमतें दी जायेंगी, वे सब ऐसी नेमतें हैं कि जिनकी आज इन्सान कल्पना भी नहीं कर सकता। उसे वहां वह सब कुछ मिलेगा जो वह चाहेगा और हमेशा उसी आराम और सुख में रहेगा। रहे वे लोग जो ख़ुदा के नाफ़रमान हैं और जो ख़ुदा की मर्ज़ी के बदले अपनी या दूसरों की मर्ज़ी पर चलना चाहते हैं, उन्हें वहां बदतरीन क़िस्म की सज़ा दी जाएगी और उसका ठिकाना एक ऐसे दुख भरे मुक़ाम में होगा, जहां वह हमेशा रहेंगे, और जहां से उन्हें कभी छुटकारा नहीं मिलेगा।

मौत के बाद कोई दूसरी ज़िन्दगी है या नहीं, और है तो

कैसी है, इसका पता हम खुद नहीं लगा सकते। हमारे पास कोई ऐसा साधन नहीं कि हम मौत के बाद वाली ज़िन्दगी के बारे में कुछ कह सकें। कुछ लोग इस तरह सोचते हैं कि ज़िन्दगी जो कुछ है बस यही है, जो हमारे सामने है। इसके बाद कुछ नहीं है और अगर है भी तो एक फ़लसफ़ियाना बात है, हमारी ज़िंदगी से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। अगर बात ऐसी ही होती कि हमारी ज़िंदगी से इस सवाल का कोई सम्बंध न होता तो बात आसान थी। हम भी यह और इस तरह की बातों पर न खुद सोचते और न दूसरों को सोचने के लिए कहते। लेकिन हक़ीक़त यह है कि हमारी इस ज़िन्दगी से इस सवाल का बहुत गहरा संम्बंध है। ख़ास कर हमारी अख़लाक़ी ज़िंदगी का तो सारा दारोमदार इसी सवाल पर है। फ़र्ज़ कीजिये कि आप यह तय कर लें कि आपकी इस ज़िंदगी के बाद कोई दूसरी ज़िंदगी नहीं है, जहां आपको अपनी ज़िंदगी के कामों का हिसाब देना है और जहां की कामियाबी और नाकामी का दारोमदार आपकी मौजूदा ज़िंदगी पर है तो यक़ीनन हर मामले में आपका व्यवहार उससे भिन्न होगा, जब आपको यह यक़ीन हो कि इस ज़िंदगी के बाद भी मामला ख़त्म नहीं हो जाता, बल्कि इसके बाद एक और ज़िंदगी है जहां हमें वही कुछ मिलेगा जो हमने इस ज़िंदगी में कमाया होगा। अब चूंकि हमारे इस सवाल का संबंध हमारी अमली ज़िंदगी से है तो हमारे लिये यह तय कर लेना बहुत ज़रूरी है कि असल हक़ीक़त क्या है।

देखिये, अगर कोई व्यक्ति तनिक भी विचार करे तो यह देखेगा कि दुनिया की इस ज़िंदगी का हाल तो यह है कि यहां बहुत से लोग जो यक़ीनन बुरे हैं और जिन्हें हर एक बुरा ही कहता है, बड़े आराम और ठाठ की ज़िंदगी गुज़ारते हुये यहां

से रुख़सत होते हैं। जब कि इसके विपरीत बहुत से ऐसे नेक लोग जिनकी नेकी में किसी को कोई सन्देह नहीं, दःुख में रहते हैं और मुसीबतें झेलते हुए इस दुनिया से रुख़सत हो जाते हैं। अब जो व्यक्ति ख़ुदा को मानता है और यह भी मानता है कि वह मुन्सिफ़ है, मेहरबान है और नेकियों की क़दर करने वाला है, वह यक़ीनन यह महसूस करेगा कि एक ऐसी ज़िंदगी की ज़रूरत है, जहां इन्सान को उसके अच्छे, बुरे कामों का बदला मिल सके। और फिर, जो व्यक्ति ख़ुदा को मानता है और जिसे यह यक़ीन है कि उसने ही इस संसार को पैदा किया है, उसके लिये इस बात के मान लेने में क्या कठिनाई है कि वही ख़ुदा जब चाहे हर इन्सान को और इस सारे संसार को दोबारा भी पैदा कर दे। इस तरह कोई वजह नहीं कि जब ख़ुदा की तरफ़ से ख़बर देने वाले कुछ सच्चे लोग यह ख़बर दें कि मौत के बाद भी एक ज़िंदगी मिलनी है तो हम उसे सच्चा न समझें।

फिर एक बात और भी देखिये। अगर इसके जवाब में कोई व्यक्ति यह कहे कि इन्सान के अच्छे या बुरे कामों का बदला पाने के लिये किसी दूसरी दुनिया की ज़रूरत ही क्या है, यह तो इसी दुनिया की ज़िंदगी में भी हो सकता है। यहां भी तो हर तरह के दुख और सुख हैं। यहां भी ऊंच और नीच है और इस बुनियाद पर वह यह मान ले कि इन्सान अपने कामों की सज़ा या इनाम पाने के लिये इस दुनिया में बार-बार पैदा होता है और अच्छे कामों के बदले में अच्छी और ऊंची ज़िंदगी पाता है और बुरे कामों के नतीजे में उसे तकलीफ़ों और ज़िल्लतों का सामना करना पड़ता है। लेकिन अगर आप ज़रा भी विचार करेंगे तो आपको इस विश्वास के ऐसे कमज़ोर पहलू खुद समझ में आ जायेंगे, जिनके बाद आपका दिल इस पर

मुतमइन (सन्तुष्ट) न हो सकेगा। मिसाल के तौर पर आप यह विचार करें कि एक तो इस संसार के जीवन में जो व्यक्ति जिस हाल में भी हमारे सामने है अगर हम यह मान लें कि वह उसकी पहली ज़िंदगी के कर्मों के फल की एक शक्ल है तो हमारी इस उलझन का कोई जवाब नहीं मिलता है कि सबसे पहला इन्सान जिस अच्छे या बुरे हाल में ज़मीन पर रखा गया था वह उसके कर्मों का फल था, क्योंकि इससे पहले तो उसने कोई व्यावहारिक जीवन कहीं बिताया ही नहीं था। फिर, इसको भी छोड़िये, आज जितने लोग जिन तरह-तरह की हालतों में पाये जाते हैं, उनके बारे में यह फ़ैसला नहीं किया जा सकता कि वह इनाम पा रहे हैं या सज़ा भुगत रहे हैं। मिसाल के तौर पर एक दीन दुखी और परेशान इन्सान को ले लीजिए, हो सकता है कि उसे इस हालत में सज़ा के तौर पर रखा गया हो, क्योंकि उसने अपने पहले जीवन में जब उसे माल, दौलत और हुकूमत दी गई थी कुछ ग़लत रवैया इख़्तियार किया था और अब वह इस दुखी दशा में सज़ा भुगत रहा है और यह भी मुमकिन है कि उसको यह हालत इनाम के तौर पर मिली हो क्योंकि हो सकता है कि वह इससे पहली ज़िंदगी में कोई शरीफ़ कुत्ता रहा हो जिसको अब उसके नेक कामों की बुनियाद पर 'इन्सानी जीवन' दिया गया हो, चाहे इसमें कुछ तकलीफ़ें ही क्यों न हों। फिर इस उलझन के अलावा एक और परेशानी यह महसूस करेंगे कि इस ज़िंदगी में हर इंसान अपनी अगली ज़िंदगी के लिये कुछ कमा भी रहा है, बल्कि यह कहना चाहिये कि उसकी पूरी ज़िंदगी आने वाली ज़िंदगी के बनाने बिगाड़ने ही का सबब बन रही है तो फिर यह एक अजीब बात है कि एक व्यक्ति एक ओर तो सज़ा भुगत रहा हो या इनाम पा रहा हो और दूसरी ओर

यही सज़ा भोगना या इनाम पाना उसकी अगली ज़िंदगी के लिये इनाम पाने या सज़ा भोगने का साधन भी बन रहा हो।

फिर इन बातों के अलावा एक पहलू तो ऐसा है कि अगर आप उस पर ग़ौर करें तो किसी तरह यह बार-बार ज़िंदगी पाने की बात आपके दिल में बैठ ही नहीं सकती। देखिये! इस ज़िंदगी में जो भी जितने काम करता है, उन सबका मामला उस की ज़िंदगी के साथ-साथ ख़त्म नहीं हो जाता। मिसाल के तौर पर एक शख़्स किसी को क़त्ल कर दे और उसके बदले में उसे भी फांसी हो जाए। उसका एक जुर्म तो यह था कि उसने नाहक़ एक शख़्स की जान ले ली, लेकिन उस जान लेने की वजस से उस ख़ानदान की आर्थिक दशा बिगड़ी, कमाई पर असर पड़ा, उसके कितने बच्चे तालीम से वंचित रह गए। इस तालीम न पाने की वजस से उन्हें सारी उम्र दुख झेलने पड़े और उनके जाहिल रह जाने की वजह से आने वाली पीढ़ियों के अख़्लाक़ बिगड़े और इसी तरह न जाने उसके एक जुर्म की वजह से किन-किन पर क्या-क्या प्रभाव पड़े और कब तक पड़ते रहें। अगर हक़ और इंसाफ़ के साथ उसके जुर्म की पूरी-पूरी सज़ा देना हो तो उस वक़्त तक इन्तिज़ार करना चाहिये जब तक यह सब पूरे न हो जायें। अगर उसके फांसी पाते ही उसे सज़ा के तौर पर कुत्ता या बिल्ली बना दिया गया, तो उसकी मिसाल ऐसी ही होगी कि किसी का खाता बन्द होने से पहले ही कोई उसका हिसाब बेबाक करने का फ़ैसला करे। यही हाल नेकियों का भी है। बहुत से काम इन्सान ऐसे करता है, जिनका सिलसिला उस के मरने के बाद भी मुद्दतों तक जारी रहता है। मसलन किसी शख़्स ने किसी अच्छी बात को रिवाज दिया तो जब तक लोग उसकी बातों से असर लेकर नेक बनते रहें उस वक़्त तक उसे भी

उन सब का बदला मिलना चाहिए। कौन जाने कि आने वाली कितनी सदियों तक लोग उससे फ़ायदा उठाते रहेंगे। ऐसी सूरत में यह कैसे हो सकता है कि एक शख़्स के मरने के बाद ही उसको मिलने वाली सज़ा या बदले का फ़ैसला फ़ौरन हो जाए।

इस तरह ग़ौर करने से यही समझ में आता है कि अगर इन्सान को सही ढंग पर उसकी अच्छाई या बुराई का बदला मिलना है तो उसके लिए एक ऐसी ज़िंदगी होनी चाहिए जो दुनिया की इस ज़िन्दगी के सिलसिले के ख़त्म हो जाने के बाद हो और जो हमेशा रहे। एक हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी इस बात के लिए उचित हो सकती है कि वहां इंसान को उसके सारे जुर्मों की सज़ा मिल सके और उसकी सारी नेकियों का पूरा-पूरा बदला दिया जा सके। इस दुनिया की चन्द दिन की ज़िन्दगी न सज़ा के लिए काफ़ी है और न इनाम के लिए।

(४)

कामियाबी का सच्चा रास्ता

अब तक जो बातें कही गई हैं वह इतनी साफ़ और सीधी बातें हैं कि यदि कोई व्यक्ति पहले से कोई विचार अपने मन में न जमा बैठा हो तो उसे इन बातो के मानने में कोई अड़चन न होगी। संसार में जब कभी भी और जिस देश में धर्म अपने असली रूप में आया है, उसने यही बातें बताई हैं और आज भी सारे मशहूर मज़हबों में यही बातें किसी न किसी रूप में पाई जाती हैं। कारण यह है कि मज़हब हमेशा अपनी असलियत के एतबार से एक ही रहा है और हक़ीक़त में उसे एक ही होना भी चाहिए। ख़ुदा एक है इसलिए उसकी ओर से आई हुई हिदायत भी बुनियादी तौर पर एक ही होनी चाहिए।ख़ुदा की तरफ़ से आए हुए मज़हब का नाम इस्लाम है, यानी वह मज़हब जो बन्दे को ख़ुदा का ताबेदार और फ़रमांबरदार बनाता है। अल्लाह की तरफ़ से हर ज़माने में और हर मुल्क में इस्लाम ही को लेकर अल्लाह के रसूल आते रहे, लेकिन जैसे-जैसे वक़्त गुज़रता गया लोगों ने अपनी तरफ़ से इसमें कुछ घटा बढ़ा दिया और इस तरह बहुत से अलग-अलग मज़हब पैदा हो गये, लेकिन अपनी असल के एतबार से सही मज़हब हमेशा एक ही रहा है और इस मज़हब की बुनियाद इन्हीं तीन बातों पर रही है जिनके बारे में ऊपर बताया गया है और जिनका खुलासा यह है—

१. यह दुनिया बेखुदा के नहीं है। इसका बनाने वाला और इन्तिज़ाम करने वाला अल्लाह है, जो अपने तमाम गुणों में अकेला है। उसका कोई साझी नहीं।

२. खुदा ने इन्सान को सीधी राह दिखाने के लिए अपना सन्देश अपने पैग़म्बरों के हाथ भेजा और हर मुल्क और हर ज़माने में अल्लाह के यह पैग़म्बर बार-बार आते रहे।

३. सारे इन्सानो को एक दिन अपने मालिक के सामने हाज़िर होना पड़ेगा, जहां उन्हें अपने सारे कामों का हिसाब देना होगा और इसी के एतबार से अच्छा या बुरा बदला मिलेगा।

यही तीन बातें इस्लाम की बुनियाद हैं और इस्लाम ही हमेशा से अल्लाह की तरफ़ से आया हुआ सच्चा दीन रहा है।

सबसे आख़िर में इस्लाम अपनी असली और पूरी शक्ल में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़रिए आया। अब इस्लाम की सही और पूरी सूरत वही है जो अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमें बताई है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ज़िन्दगी के हालात इस वक़्त पूरी तफ़सील के साथ और बिल्कुल सही-सही दुनिया में मौजूद हैं। उनके सिवा कोई और अल्लाह का पैग़म्बर ऐसा नहीं है, जिसके बारे में हम इतना ठीक-ठीक और तफ़्सील से जानते हों। इसी तरह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अल्लाह की जो आख़िरी किताब (क़ुरआन शरीफ़) उतरी बिल्कुल सही और असल सूरत में दुनिया में मौजूद है। इसके अलावा दुनिया में कोई दूसरी आसमानी किताब ऐसी मौजूद नहीं, जो अपनी सही शक्ल में हमें मिल सके। अब क़ियामत तक आने वाले इन्सानों के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का बताया हुआ रास्ता ही सीधा रास्ता है और यही इस्लाम की आख़िरी

और सही शक्ल है।

इस वक़्त इस्लाम का नाम लेने वाले दुनिया में बहुत से मुसलमान मौजूद हैं, लेकिन उनमें से ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो अपने अक़ीदे और अमल के लिहाज़ से पूरे मुसलमान नहीं हैं। अल्लाह की नज़र में मुसलमान वही है जो इस्लाम के बताये हुये उसूलों को माने और उनके मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी को ढालने की कोशिश करे। इस्लाम किसी नस्ल या क़ौम का दीन नहीं है, वह अल्लाह की तरफ़ से आई हुई, एक हिदायत है और दुनिया में बसने वाले हर इन्सान के लिए है। इसकी सबसे पहली और बुनियादी मांग यह है कि इन्सान एक ऐसी हस्ती को माने जिसने सारी दुनिया को पैदा किया है और जो उसका अकेला मालिक है। उसका नाम अल्लाह है। वही इस क़ाबिल है कि सारे इन्सान उसकी इबादत करें और उसी के हुक्मों पर चलें और उसके सिवा किसी दूसरे को न उस की इबादत में शरीक करें और न इताअत में। दिल से इस बात पर यक़ीन करें कि अल्लाह के सिवा कोई ऐसा नहीं है जो हमारे काम बना सके, हमारी ज़रूरतें पूरी कर सके, हमारी मुश्किलों को दूर कर सके या हमारी फ़रियाद सुन कर हमारी मदद कर सके। क्योंकि सारी ताक़त अल्लाह के पास है और उसके सिवा कोई दूसरा ऐसा नहीं है जिसे अपने इख़्तियार से कुछ भी करने की क़ुदरत हो। इसलिए यह बात किसी तरह ठीक नहीं कि आदमी अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को नफ़ा या नुक़सान पहुंचाने वाला समझे और उससे डरे या उस पर भरोसा करे या उससे उम्मीदें लगाये कि वह हमारे काम बना देगा। जब ये बातें इन्सान के दिल में बैठ जायें तो फिर यह नहीं हो सकता कि वह अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के आगे सिर झुकाये, किसी और की पूजा करे, उसके नाम पर भेंट चढ़ाये और उससे दुआयें

मांगे या मदद के लिए पुकारे। खुदा पर सच्चा यक़ीन रखने वाला शख़्स तो सिर्फ़ उसी को मालिक और मुख़्तार समझेगा और उसी के हुक्मों पर चलेगा और उसके सिवा किसी दूसरे का यह हक़ तस्लीम नहीं करेगा कि उसे भी इन्सानों पर हुक्म चलाने का हक़ है। वह तो सिर्फ़ अल्लाह के क़ानून को क़ानून समझेगा, क्योंकि क़ानून बनाने और चलाने का हक़ उसी को होता है जो मालिक हो। अपनी पैदा की हुई सारी चीज़ों का असल मालिक और हाकिम अल्लाह है और उसी को यह हक़ पहुंचता है कि वह इन्सानों के लिये क़ानून बनाये।

जो शख़्स खुदा को इस तरह अपना मालिक और स्वामी मान लेता है, वह फिर अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के कहने पर नहीं चलता, न अपने दिल का कहना करता है और न अपने जैसे दूसरे इन्सानों के सामने गरदन झुकाता है। वह तो अपनी हर चीज़ यहां तक कि अपनी जान और माल, अपनी सोचने-समझने और काम करने की ताक़तों को अल्लाह का माल समझता है और यह समझता है कि सब चीज़ें अल्लाह की तरफ़ से अमानत के तौर पर मुझे मिली हैं और मुझे एक दिन अल्लाह के सामने जवाब देना होगा कि मैंने इन्हें किस तरह इस्तेमाल किया। ऐसे शख़्स का यह हाल होता है कि वह हर मामले में अल्लाह की खुशी को सामने रखता है और जो कुछ भी करता है उसमें इस बात का ख़्याल ज़रूर रखता है कि अल्लाह उससे राज़ी हो जाये। ज़िन्दगी के हर मामले में अल्लाह की हिदायत और उसका मुक़र्रर किया हुआ क़ानून उसके सामने रहता है और लोगों से मामला करने और उनके साथ सम्बन्ध रखने में हर क़दम पर वह अल्लाह की खुशी और उसके क़ानून को सामने रखता है।

इस्लाम की दूसरी मांग यह है कि इन्सान हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अल्लाह का रसूल माने और यह यक़ीन करे कि दुनिया के असली मालिक की तरफ़ से सारे इन्सानों को सीधी राह दिखाने के लिए आख़िरी पैग़ाम लेकर आपको ही भेजा गया है और आप जो कुछ लेकर आये हैं वह क़ियामत तक पैदा होने वाले सारे इन्सानों के लिए ज़िन्दगी गुज़ारने का सही और मुकम्मल ज़ाब्ता है और अब इस ज़ाब्ते के बाद इंसान को किसी और हिदायत की ज़रूरत नहीं है। जो शख़्स इस बात को मान ले उसके लिए सही तरीक़ा यही है कि जब उसे यह मालूम हो जाये कि फ़लां बात अल्लाह के रसूल ने बताई है तो वह उसे तुरन्त मान ले।

जब उससे कहा जाए कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़लां बात से रोका है तो वह उसे हरगिज़ न करे और जब उससे कहा जाए कि आपने फ़ला बात का हुक्म दिया है तो वह उसे फ़ौरन मान ले। ऐसा शख़्स ज़िन्दगी के हर मामले में यही मालूम करने की कोशिश करेगा कि इस बारे में ख़ुदा की किताब में क्या हिदायत दी गई है और ख़ुदा के रसूल ने इस बारे में क्या फ़रमाया है।

तीसरी बात जिस के माने बिना कोई व्यक्ति मुसलमान नहीं हो सकता यह है कि इन्सान इस बात पर यक़ीन रखे कि मरने के बाद उसे फिर ज़िन्दा होना है और एक दिन ऐसा ज़रूर आयेगा जब सारे इन्सान अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे और वहां उनसे उनके कामों का हिसाब लिया जाएगा।

यह है इस्लाम की बुनियादी बातें और उनका मतलब—ये सब बातें इन्सान के दिल की आवाज़ है। इसे समझने में आप कोई उलझन महसूस नहीं करेंगे।

——०——